हिमाचल प्रदेश के शिमला जिला के लघु–मन्दिरों की कला व वास्तुकला

अनूप कुमार
शोधकर्त्ता पी–एच.डी., दृश्य कला विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, समरहिल, शिमला

भूमिका

शिमला के भौगोलिक परिवेश में अनगिनत भव्य और ऐतिहासिक मन्दिर निर्माण के साथ ही छोटे व लघु, लघु रूप में मन्दिर निर्माण की परम्परा सदियों से चली आ रही है। आमतौर पर इस प्रकार के मन्दिरों को स्थानीय भाषा में देवठाणि या देवठी कहा जाता है। हालाँकि क्षेत्रीय बदलाव के कारण लोकभाषा में परिवर्तन स्वरूप लघुमन्दिर यहाँ अनेक नामों से प्रचलित हैं, जैसे– देहरा, देवरा, देहरी, देऊरा, देयोरा, देवरी इत्यादि। वर्तमान समय में देवठाणियाँ प्रत्येक ग्राम व घर में बनी देखी जा सकती है। जो स्थानीय देवता, कुल ईष्ट देव, कुल देवी (कुलजा) या अन्य देवता के निवास रूप में बनी होती है। इसके साथ ही क्षेत्र के प्रमुख देवता के मन्दिर–प्रांगण में भी इस प्रकार के लघु मन्दिर मुख्य देवता के सहायक देव, वीर, क्षेत्रपाल व अन्य शक्ति निवास रूप में बने देखे जा सकते हैं।

कला तथा वास्तुकला के अन्तर्गत कला से अभिप्राय देवठाणियों के सौन्दर्यीकरण हेतू काष्ठ ईत्यादि पर किए गए कलाकर्म या नक्काशी से है। इसी प्रकार वास्तुकला से अभिप्राय देवठाणियों के निर्माण हेतू प्रयुक्त संरचनात्मक शैली से है।

परंपरागत पहाड़ी शैली में निर्मित देवठाणियों के भवन कलाकारी (नक्काशी) के लिए विस्तृत मंच प्रदान करते हैं। मन्दिर की भवन संरचना पर किया गया कला–कम भी अपनी भूमिका निभाते हुए मन्दिर संरचना को दैवीय ईमारत में तब्दील कर धार्मिक संस्थान का भाव प्रदान करता है। कला तथा वास्तुकला का संयोजन ही मन्दिर के भवन को कलात्मक सौन्दर्य प्रदान करता है, जिसके कारण

स्थानीय मन्दिर व लघु–मन्दिर, पारंपरिक पहाड़ी शैली के महत्त्वपूर्ण केन्द्र बनकर उभरे हैं। पहाड़ी शैली में बने मन्दिरों के संदर्भ में कला तथा वास्तुकला का कलात्मक सम्बन्ध, एक ही सिक्के के दो पहलू के रूप में अपनी भूमिका निर्दिष्ट करता है। यहाँ कला के बिना वास्तुकला अधूरी प्रतीत होती है क्योंकि स्थानीय क्षेत्रों में पारंपरिक घरेलू भवनों और मन्दिरों का वास्तु लगभग एक जैसा ही होता है। केवल काष्ठ पर निर्मित नक्काशी और अलंकरण से ही धार्मिक भवन की पहचान हो पाती है। इसलिए मन्दिर संरचना को घरेलू भवन संरचना से पृथक और श्रेष्ठ दर्शाने के उद्देश्य से विभिन्न कलात्मक नक्काशी से मन्दिर वास्तु को अलंकृत करने की परंपरा पहाड़ी क्षेत्रों में देखी जा सकती है जो धार्मिक ईमारत और धर्मनिरपेक्ष ईमारत के बीच अन्तर स्पष्ट भी करती है। हालाँकि इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए विभिन्न प्रकार की छत्त शैलियों का संयोजन भी मन्दिर वास्तु की विशेषता है। कला और वास्तुकला का समुचित संयोजन ही स्थानीय मन्दिरों में निहित पारंपरिक पहाड़ी शैली के संस्करण का परिचायक है। स्थानीय कारीगर भी सराहना के पात्र हैं जिनके अथक परिश्रम और निःस्वार्थ भाव से किए गए कलाकर्म से ही कला और वास्तुकला का कलात्मक सम्बन्ध शानदार काष्ठ मन्दिरों की शक्ल में परिलक्षित होता है। कुशल कारीगरी से युक्त मन्दिरों की नक्काशी इतनी भावपूर्व है कि विभिन्न विषयाकृतियाँ मानों संवाद करने को तैयार हैं। मन्दिर वास्तु यदि देह हैं तो नक्काशी उसका श्रंगार है। स्थानीय मन्दिरों की व्याख्या में यही कहा जा सकता है कि यहाँ कला के लिए ही वास्तुकला है तथा वास्तुकला के लिए ही कला है। दोनों के संयोजन से कलात्मक सौन्दर्य का प्रस्फुटन होता है जो मन्दिर के रूप में हमारे समक्ष है।

परम्परागत पहाड़ी कला वास्तुकला के प्रतीक लघु–मन्दिर ज़िला शिमला की धरोहर कहे जा सकते हैं जो यहाँ की लोक कला व संस्कृति के दपर्ण हैं। स्थानीय काष्ठ कला के विशुद्ध रूप को सहेज कर रखने में देवठाणियों का अहम योगदान माना जा सकता है। पूर्वकाल में काष्ठ मन्दिर वास्तुकला के उद्भव के प्रतीक इन लघु–मन्दिरों के रूप में प्राचीन खश कला के जीवित साक्ष्य आज भी हमारे बीच मौजूद हैं। इन मन्दिरों में विद्यमान वास्तुशिल्प क्षेत्र की सामाजिक और सांस्कृतिक विविधताओं को लोक–कला के संस्करण में प्रस्तुत करते हैं। देवठाणियों की उत्कृष्ट कला–वास्तुकला महान पूर्वज कलाकारों के गूढ़ ज्ञान, दैवीय कौशल और सहज अभिव्यक्ति का प्रमाण है। शानदार नक्काशी और

अनूठी संरचना कारीगरों के निःस्वार्थ और भाव पूर्ण कलाकर्म का बेमिसाल उदहारण है। पूरी तन्मयता से किया गया कलाकर्म वर्तमान कलाकारों के लिए किसी प्रेरणा से कम नहीं।

इस क्षेत्र में सदियों से ही लघु–मन्दिर निर्माण की बहुविध और समृद्ध परम्परा रही है। क्षेत्र में निर्मित उत्कृष्ट और भव्य काष्ठ मन्दिर जो अपनी अनुठी कला व वास्तुकला के कारण देशभर में प्रसिद्ध है, पहाड़ी लोककला व शैली की इसी समृद्ध परम्परा का विकसित रूप है। ज़िला शिमला एक पहाड़ी प्रान्त है। यहाँ का जीवन कठिन और चुनौतिपूर्ण होने के बावजूद भी इस क्षेत्र की सांस्कृतिक विरासत समृद्ध और विविधतापूर्ण है। यहाँ कण–कण में देवताओं का वास है। देवी–देवताओं के प्रति

मान–सम्मान, आस्था व समर्पण का भाव क्षेत्र के सीधे व सरल लोगों के संस्कारों में है। वैदिक देवी–देवताओं के साथ–साथ ग्रामीण समाज में लोक देवता और स्थानीय अथवा ग्राम देवता का विशेष महत्त्व है, जो यहाँ की देव प्रधान संस्कृति के प्रमुख स्त्रोत व संवाहक हैं। स्थानीय वासियों में भी वैदिक देवी देवताओं की अपेक्षा स्थनीय देवताओं के प्रति अधिक झुकाव देखा जा सकता है। जो इनके घनिष्ठ आत्मीय संबंध के रूप में परिलक्षित होता है। क्षेत्र के अधिकांश भागों में देव निवास के रूप में देवठाणियों का निर्माण किया गया है जो लोगों की श्रद्धा और देव आसक्ति का प्रत्यक्ष उदहारण है। लघु–मन्दिर यहाँ के ग्रामीण समाज व संस्कृति के अभिन्न अंग हैं जो महत्त्वपूर्ण धार्मिक संस्था के रूप में अपनी भूमिका निर्दिष्ट करते हैं। ग्रामीण जीवन से जुड़ी छोटी–छोटी गतिविधियों के साथ सामूहिक लोकाचार के अनेक पहलूओं पर देवठाणियों का स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता है।

उपसंहार

पूर्वकाल से प्रचलित भयानक और राक्षसी प्रवृति के देवताओं का प्रचलन आज भी पहाड़ी समाज में व्याप्त है जो ग्रामीण लोक जीवन के अन्तर्गत रहस्यपूर्ण रीति–रिवाज़ों और परम्पराओं को उजागर करता है। क्षेत्र में प्रचलित दन्तकथाओं, जनश्रुतियों में इन भयानक शक्तियों के किस्से भरे पड़े हैं। वर्तमान में भी इन शैतानी शक्तियों के निवास रूप में घरेलू आवासों से दूर जंगलों ईत्यादि में लघु–मन्दिर निर्मित देखे जा सकते हैं। इन देवठाणियों के भवनों के अन्तर्गत अनेक रहस्यमयी और डरावनी आकृतियों का उत्कीर्णन देखा जा सकता है, जो इन शक्तियों के चरित्र का प्रकटीकरण करने

का स्थानीय माध्यम हो सकता है। इसलिए यह कहना गलत नहीं होगा कि इन देवठाणियों में निर्मित रहस्यमयी कलाकृतियाँ लोक कला के सजावटी उपकरण नहीं है। अपितु यह एक शक्तिशाली पंथ की छवियाँ हैं जो कि आज भी प्रकृति में अपना अस्तित्व रखती हैं और बेवजह हस्तक्षेप करने या उकसाए जाने पर दण्डित भी कर सकती हैं।

संदर्भ सूची

जिला शिमला के कलात्मक मोहरे–एक अध्ययन, अप्रकाशित शोध प्रबंध, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, समरहिल, शिमला।

ठाकुर, सूरत (2004) हिमाचल की देव संस्कृति (मन्दिर, मेले, त्यौहार), एच.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

मिश्र, इन्दुमती (1972) प्रतिमा विज्ञान (वैष्णव पुराणों के आधार पर), मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल।

मिश्र, रमानाथ (2008) भारतीय मूर्तिकला का इतिहास, नाइस प्रिंटिंग प्रैस, दिल्ली।

शर्मा, बंशी राम (1986) हिमाचल लोक संस्कृति के स्त्रोत, दिल्ली।

शर्मा, नागेन्द्र (1996) हिमालय का उतरांचल रामपुर बुशैहर, बलीभद्र प्रकाशन रामपुर।

Charak, Sukh Dev Singh (1978) History and culture of Himalayan States Vol. III, Himachal Pradesh Part III, New Delhi.

Chaudhary, Minakshi (2006) Himachal A complete Guide to the Land of Gods, Rupa. Publisher Co. Delhi.

Coomaraswamy, Ananda K. (1989) The Indina Craftsman, 1909, Delhi: Munshiram Manoharlal.

Handa, O.C. (2002) Temple Architecture of the Western Himalaya, Indus Publishing Company, Delhi.

Sanjeev, Kumar (2018) Shimla ke Daveey Mohroa ks udbhav va vikas, Jr. Hill Quest, Vol.5, Issue 1, January-June, 2018, Pratibha Spandan.

Singh, Mian Goverdhan (2012) Art and Architecture of Himachal Pradesh, B.R, Publishing, Delhi